दिनांक 6 मार्च 2018 को इंडिया न्यूज के प्रख्यात मुख्य सम्पादक श्री दीपक चौरसिया द्वारा लिखित पुस्तक ''कूड़ा–धन'' के विमोचन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. ''कूड़ा और धन'' सामान्य जनमानस के लिए ये दोनों शब्द विरोधाभासी हैं। कूड़ा हर कोई जल्द से जल्द फेंक देना चाहता है। चाहे कहीं भी फेंकना पड़े, बस अपने आस–पास कूड़ा ना रहे.., जबकि धन को हर कोई सहेज कर रखना चाहता है।

2. कूड़ा–धन शीर्षक जितना ही हैरान करने वाली बात ये लगी कि कूड़ा–कचरा पर दीपक चौरसिया जी किताब लिख रहे हैं, जो राजनीतिक, कूटनीतिक, रणनीतिक विषयों की पत्रकारिता के लिए विख्यात रहे हैं।

3. पुस्तक में कई रोचक व ज्ञानवर्धक प्रसंग हैं जो दीपक जी द्वारा गहन अध्ययन एवं लोगों से मिलकर लिखे गए हैं। उनमें एक श्री वी.एस. श्रीजीत जी कोडंगल्लूर शहर में साईंस सेंटर के डायरेक्टर हैं। उनका कचरा प्रबंधन सराहनीय है।

4. लीक से अलग हटकर पत्रकारिता करने वाले दीपक चौरसिया ने ये किताब भी लीक से अलग हटकर लिखी है..। पहली बार कूड़े को समस्या की बजाय संसाधन के रूप में देखने का साहस दीपक चौरसिया ने किया है।

आमतौर पर जब गंदगी, कूड़ा–करकट, पर्यावरण संकट की बात आती है तो पत्रकारों का दृष्टिकोण समस्या पर ही केंद्रित रहता है, लेकिन कूड़ा धन में दीपक चौरसिया ने सभी तरह के कूड़े–कचरे के प्रबंधन की बात की है..। पूरी किताब सकारात्मक है।

5. कूड़े–कचरे की समस्या से आज हम सभी परिचित हैं..। ये सच्चाई है कि कूड़े–कचरे को पैदा होने से नहीं रोका जा सकता..। आदिकाल से कूड़ा–कचरा मानव जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा है..। हम खुद को साफ रखते हैं तो गंदगी पैदा होती है..। भोजन करते हैं तो उससे भी कूड़ा निकलता है..। रोज़मर्रा की जिंदगी में हम जो कुछ भी उपयोग करते हैं, उसका कुछ ना कुछ अंश कूड़े–कचरे के रूप में उत्सर्जित होता ही है..। ऐसा पहले भी होता था, आज भी हो रहा है और आगे भी होगा..। समय के साथ–साथ विज्ञान उन्नति करता है तो कूड़े–कचरे की समस्या भी नए रूप धारण कर लेती है।

6. Vegetable Waste को पशुओं के चारे के रूप में उपयोग करने से एक तो पशुओं को भोजन मिलेगा दूसरे कचरे का समुचित निपटान संभव हो सकेगा। पशुओं द्वारा किए गए Waste को हम ईंधन के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। उनके Waste से बायो गैस और वर्मी कम्पोस्ट भी बनाया जा सकता है जो कृषि के लिए सबसे बेहतर खाद माना जा सकता है।

7. हमारी पीढ़ी तक किसी को कूड़ा–कचरा संकट नहीं महसूस होता था, क्योंकि तब हमारे जीवन में आधुनिक उत्पादों की भरमार नहीं थी..। जो कूड़ा निकलता था, उसका लोग सदुपयोग इतनी आसानी से कर लेते थे कि कूड़ा प्रबंधन दैनिक दिनचर्या का हिस्सा लगने लगता था..। घर का बचा–खुचा भोजन गाय–भैंस के चारे में चला जाता था..। साग–सब्जियों के छिलके घूरे के ढेर में जाते थे, जो बाद में खाद बनकर खेतों में चला जाता था..।

8. जूठे बर्तन साफ करने के लिए मिट्टी या राख का उपयोग होता था और जूठन साफ करने के बाद जो पानी निकलता था, वो घर के पीछे जाता था। आमतौर पर घरों के पीछे के हिस्से में लोग साग–सब्ज़ी उगाते थे, पुदीना और अरवी के पत्ते घर के आंगन से निकलने वाले पानी से ही पनपते रहते थे..। फसलों का अवशेष भी खेती में इस्तेमाल हो जाता था..। पशुओं को पराली और भूसा चारे के रूप में मिलता था।

9. जो पराली हम पशुओं को चारे के रूप में खिलाते हैं वह उत्तर भारत के राज्यों हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा एवं दिल्ली के लिए मुसीबत का सबब बन गया है। यदि इस पराली का समुचित प्रबंधन किया जाए तो इसके व्यवस्थित प्रबंधन से बिजली पैदा भी होगी एवं इन प्रदेशों मे वायु प्रदूषण की समस्या से भी निजात मिलेगी। बीते कुछ सालों से पराली वायु प्रदूषण के एक बड़े कारक के रूप में उभरा है। इस समस्या का समाधान हम वैज्ञानिक तरीके से आसानी से कर सकते हैं।

10. अब ऐसा न के बराबर हो रहा है, इसलिए घर के कूड़े से लेकर फसलों के अवशेष तक के प्रबंधन का संकट हमारे सामने है..। पहले जो उपभोग की जो chain थी, वह टूटा है। Food Consumption pattern में बदलाव हुआ है। बढ़ती हुई आबादी ने सबकुछ उलट–पुलट कर रख दिया है।

11. नदी–नाले, तालाब, झरने सब सुखने लगे हैं क्योंकि पानी का जबर्दस्त दोहन हुआ है। मैं देखती हूं कि बड़े–बड़े महानगरों के किनारे कूड़े के पहाड़ खड़े होते जा रहे हैं। अभी हाल ही में उत्तर प्रदेश के निकट एक कूड़े का पहाड़ बालू के रेत की भांति फिसलकर पास वाली सड़क पर गिर पड़ा और उस दुर्घटना में कुछ जानें चलीं गईं और कार भी पास के नाले में जा गिरी। तो ऐसी घटनाएं न हो, इसके लिए हमें पहले से सोचना होगा। यानि कि कूड़ा प्रबंधन बहुत महत्वपूर्ण पहलू है।

12. ''कूड़ा–धन'' में दीपक चौरसिया ने हर तरह के कूड़े के प्रबंधन का उपाय सुझाया है..। उन्होंने बताया है कि कैसे सीवर के पानी का भी सौ प्रतिशत दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है। सीवर के पानी से मिथेन निकालकर बायोगैस के रूप में उसका उपयोग किया जा सकता है। उससे इतनी ऊर्जा पैदा की जा सकती है कि हम पेट्रोल–डीज़ल के आयात की निर्भरता कम कर सकते हैं। इस बॉयो गैस के उपयोग से हम कई शहरों में बसों का संचालन भी उसी गैस से कर सकते हैं।

13. प्लास्टिक का कचरा आज पर्यावरण के लिए सबसे बड़ा संकट है, लेकिन दीपक चौरसिया ने इसका भी समाधान बताया है। उदाहरण देकर कूड़ा धन में

बताया है कि प्लास्टिक कचरे से भी पेट्रोल–डीज़ल बन सकता है। फसलों के अवशेष से जैविक खाद बनाने से लेकर इथेनॉल तक का उत्पादन किया जा सकता है...। प्लास्टिक कचरे से पॉलिएस्टर कपड़ा बनाया जा सकता है। अरोड़ा परिवार ने इस विचारधारा को सत्य सिद्ध कर दिया है। प्लास्टिक कचरे को पेट्रोल बनाने का उपयोग अति प्रशंसनीय एवं तर्कसंगत है।

14. इस पुस्तक में कई जगह Economy and Environment की चर्चा हुई है। दोनों के संरक्षण का मंत्र Waste to Wealth भी हो सकता है। Agriculture Waste, Bamboo से Bio Ethanol बनाकर उसे ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। दिल्ली एवं अन्य मेट्रो शहरों में बायो ईंधन के विषय में काफी विस्तार से इस पुस्तक में समझाया गया है। गडकरी जी द्वारा दिया गया मार्गदर्शन उल्लेखनीय है।

15. उन्होंने एक जगह वेस्ट से सड़क बनाने की चर्चा भी की है। ऐसा बताया है कि वेस्ट से अलकतरा मिलाकर जो सड़क बनती हैं वह टिकाउ भी होती है।

16. इस पुस्तक में इंसान के बालों का महत्व भी बताया गया है। इंसानी बाल, जो सैलून या ब्यूटी पार्लर में हेयर कटिंग के बाद निकलते हैं, उनका अरबों रुपये का उद्योग खड़ा हो रहा है..। उससे वह अमीनो एसिड तैयार हो रहा है जिसे यदि हम खेतों में उपयोग करें तो कृषि के पैदावार में भी काफी बढ़ोत्तरी हो सकती है।

17. आसान भाषा में यह कहा जा सकता है कि जिसे हम कुड़ा समझते हैं वह कूड़ा नहीं है। जिसे हम–आप कूड़ा समझते हैं, उसकी भी कीमत होती है और कुछ कूड़े–कचरे की कीमत तो हमारी–आपकी कल्पना से भी बहुत ज्यादा है।

18. इन दिनों ई–युग चल रहा है। हर कहीं इलेक्ट्रॉनिक्स सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों की भरमार है। हर आदमी की जेब में इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है। मोबाइल फोन भी तो ऐसा ही उपकरण है, जिसके बिना जीवन ठप–सा हो जाता है। कूड़ा धन में दीपक चौरसिया ने बताया है कि इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों का कचरा कितना विशाल और भयानक है।

19. हम–आप सबको इलेक्ट्रॉनिक्स सामान खरीदते समय ही पता होता है कि इसकी उम्र कितनी है? एक मोबाइल फोन हो, टीवी हो, कंप्यूटर हो, कंपनियां एक साल से ज्यादा की गारंटी नहीं देतीं..। मतलब कि एक साल बाद उपकरण खराब होने की पूरी आशंका है। दो–चार बार आप रिपेयरिंग कराके उसे ठीक करा सकते हैं। लेकिन उसके बाद? फिर तो वो कचरा ही बनेगा..। पूरी दुनिया अब इलेक्ट्रॉनिक्स कचरे यानी ई–वेस्ट के संकट से जूझ रही है। कूड़ा धन में ई–वेस्ट का समाधान भी बड़े रोचक अंदाज़ में बताया गया है।

20. ई–कचरे का प्रबंधन आज कल एक व्यापक रूप ले चुका है। कचरा पैदा करने के मामले में भारत 5वें नम्बर पर है। भारत में हर साल 52 लाख मीट्रिक टन कचरा पैदा होने लगेगा। इस डिजिटल वेस्ट के लिए पर्याप्त recycling centres की व्यवस्था किए जाने की आवश्यकता है। कबाड़ियों, खासकर छोटे–छोटे बच्चों

द्वारा उन कचरों से तांबा, अल्यूमिनियम, सोना इत्यादि निकालने का काम कर रहे हैं। सरकार ने इस संबंध में नीति बनाई है E-waste recycling की। इस समय पूरे देश में लगभग 178 Dismantling Centres हैं जिसकी संख्या और बढ़ाए जाने की जरूरत है।

21. देशभर में E-waste recycling के विषय में प्रशिक्षण एव स्किल डेवलपमेंट एवं sensitization की जरूरत है। कम्प्यूटर, आई पैड, फोन इत्यादि खराब हो तो क्या करना है? कहां फेंकना है, यह बात भी लोगों तक जानी चाहिए। जापान, कोरिया आदि देशों में नियम है कि इलेक्ट्रॉनिक्स का सामान बनाने वाली कंपनी साल में जितना सामान बनाती है, उसका 75 प्रतिशत करने का इंतजाम भी करें। इस दिशा में भी चिंतन किया जाना चाहिए।

22. E-waste Management बहुत आवश्यक है एवं इस कचरे के निपटान के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इस कचरे में कई रसायनिक तत्व होते हैं जो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए भी खतरा पैदा कर सकते हैं। अतः, इनके व्यवस्थित निपटान की आवश्यकता होती है। इसके लिए पर्याप्त नियम भी होना चाहिए।

23. इस पुस्तक की एक विशेषता मुझे समझ में आती है कि ये किताब किसी एक वर्ग या समूह के लिए नहीं है..। ये किताब सबके काम की है..। चाहे घर–गृहस्थी वाले लोग हों, या कूड़ा प्रबंधन के लिए उत्तरदायी समझी जाने नगर निकाय हों, पर्यावरण संरक्षण में जुटी संस्थाएं हों, रेजिडेंट्स वेल्फेयर

एसोसिएशन हों, हेयर सैलून चलाने वाले हों, किसान हों, बड़े कारोबारी हों या फिर नए उद्यमी.., सबके लिए इस किताब में जानकारियों का खजाना है..। कूड़ा प्रबंधन को रोजगार से जोड़ने के कितने तरीके हो सकते हैं, ये सब इस किताब में आपको पढ़ने को मिलेगा।

24. वास्तव में दीपक ने 'कूड़ा–धन' के माध्यम से हमारी उसी पुरानी परंपरा और संस्कृति की ही याद दिलाई है। यह बातें हमारी परंपरा और संस्कृति का ही हिस्सा हैं कि जिन वस्तुओं का उपयोग करो, उनके अवशेष और अपशिष्ट का भी उचित प्रयोग करो। अब जैसे पहले हम घरों में घड़े में पानी रखते थे लेकिन घड़ा अगर टूट जाए तो उसे फेंकने की बजाय उसी को गमला बना देते थे। ऐसे अनेक प्रयोग हैं, जो हम पहले करते थे।

25. इस किताब की मूल शिक्षा यही है कि कोई भी वस्तु कूड़ा नहीं होती, कचरा नहीं होती, अगर उसका सही तरीके और सही दृष्टि से उपयोग किया जाए तो। या तो वह वस्तु खाद बनेगी या किसी और उपयोग में आएगी। प्रकृति और ईश्वर द्वारा निर्मित वस्तुओं का अगर हम सही सोच और समझ के साथ उपयोग करें तो कुछ भी व्यर्थ नहीं जाएगा, यह हमारी संस्कृति में है। यही हमारी परंपरा हमें सिखाती है। इस किताब में वही बातें कहीं न कहीं सिद्ध हो रही हैं। अभी तक हम शास्त्रीय दृष्टिकोण से चीजों को देखते थे, अब उसी को वैज्ञानिक दृष्टिकोण मिल रहा है।

26. नई तकनीक के उपयोग से हम बेहतर कूड़ा प्रबंधन की ओर भी बढ़ रहे हैं। Bio Degradable and Non-Bio Degradable दो प्रकार के कचरे को source segregation करने के प्रति भी समाज में जागरूकता आई है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत नीला और हरा कचरे का डिब्बा प्रदान किया जा रहा है। यह हमारे समाज में आई जागरूकता का ही परिणाम है।

27. New technology is creating new jobs in newer areas and more opportunities are being pouring in for our young and dynamic youths of the country.

28. हमें कूड़े के अर्थशास्त्र को सराहना होगा, समझना होगा और नई दिशा में आगे बढ़ना होगा। यह दिशा स्वच्छता, स्वावलम्बन का सुचक होगी।

————————